लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला - 1

कौमारम्

शिशुगीतसंकलनम्

मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः

लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला - 1

कौमारम्

(शिशुगीतसङ्कलनम्)

प्रधानसम्पादकः

प्रो. राधावल्लभत्रिपाठी

त्रिवेणीकविः

मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः

राष्ट्रपतिसम्मानालङ्कृतः
इलाहाबाद-उदयन-शिमलाविश्वविद्यालयीयोऽध्यापकः
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयकुलपतिचरः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
नवदेहली

कविवाक्

देववाणी संस्कृत का काव्यवाङ्मय यद्यपि अत्यन्त समृद्ध, विविध, विपुल एवं उत्कृष्ट है, तथापि प्राचीन वाङ्मय में 'शिशुकाव्य' का अभाव सा दिखाई पड़ता है। महाकवि कालिदास-प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक में कुमार भरत (रिपुदमन) के सन्दर्भ में एकमात्र श्लोक 'आलक्ष्य दन्तमुकुलाननिमित्तहासैः' मिलता है जिसे हम निरवद्य रूप से 'शैशववर्णन' मान सकते हैं। ऐसे ही दो-चार और सन्दर्भो के अतिरिक्त समूची संस्कृत काव्ययात्रा 'शैशववर्णन' से प्रायः विरहित है। वस्तुतः इसी कमी को अनुभव करते हुए मैने स्वोपज्ञ **'जानकीजीवनम्'** महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में भगवती सीता के शैशव का सांगोपांग वर्णन किया, जो संभवतः एकमात्र शैशववर्णन है – समूचे संस्कृत काव्यवाङ्मय में। परन्तु प्रबन्धकथा का अंश होने के कारण वह शैशववर्णन भी 'सामान्य शिशुकाव्य' नहीं माना जा सकता।

'कौमारम्' काव्यसंग्रह में मैने स्वतंत्र रूप से शिशुकाव्यों का संग्रह किया है। ये कविताएँ बच्चे के विकासोन्मुख जीवन के क्रम में ही, उत्तरोत्तर विकास की सूचक हैं। इनके विषय हैं – ईश्वरवन्दना, परिवार, माता-पिता, विद्यालय, विद्यालय की शिक्षा, परिवेश (गाँव, नदी, बाग, रेलगाड़ी, बन्दर का नाच) अनुभव (तितली, मधुमक्खी, चींटी, आकांक्षा, स्वप्नानुभव आदि) तीज-त्यौहार तथा राष्ट्रीयता का बोध!

चित्रों के साथ प्रकाशित यह शिशु-काव्यसंग्रह निश्चय ही बच्चों को आकृष्ट करेगा, यह मेरा दृढ़ विश्वास है। इन कविताओं में लयमाधुरी एवं शिक्षा दोनों है। बच्चे बड़ी सरलता से इन गीतों को कण्ठस्थ कर सकते हैं। इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ बन्धुरत्न आर्य नरेन्द्र द्वारा **लोकसंस्कृतम्** (संस्कृत त्रैमा. अरविन्दाश्रम, पाण्डीचेरी) में प्रकाशित की जा चुकी हैं। अतः

कौमारम्

॥ शिशुगीतसङ्कलनम् ॥

गीतशीर्षकम्

- ❑ परमेश्वरवन्दनम् 1
1. यशस्तस्य नित्यं गायामः!!
- ❑ सृष्टिपरिचयः 5
2. परमेश्वरं न तं जानीथ?
- ❑ सर्वधर्मसमभावः 10
3. परमेश्वरं य एकं पश्यति!!
- ❑ परिवारसदस्यपरिचयः 12
4. मम परिवारः
- ❑ जननीमाहात्म्यम् 14
5. मम जननी
- ❑ शरीराङ्गपरिचयः 16
6. प्रथमोऽप्यहं भवामि!
- ❑ मातुलचन्द्रगीतम् 18
7. मातुल चन्द्र!!

❑ मार्कटिकपरिचयः

19. मार्कटिकोऽयं भ्रमति ग्रामे!!

डिमिक्डिमक् वादयन् डमरुकं
मार्कटिकोऽयं भ्रमति ग्रामे॥
एहि सुधाकर! मोहन! सोहन!
कमले! विमले! रमे! बलाके!
प्रदर्शयिष्यति वानरनृत्यं
सर्वसमक्षं बहिरारामे॥
परिधिं रचय वर्तुलाकारं
मौनं भज, मा कुरु सीत्कारम्।
मा मा शातय वानरयुगलं
तिष्ठ, न धाव दक्षिणे-वामे॥
प्रारभते खलु वानरनृत्यं
कियद्विचित्रं कियच्च सत्यम्।
पादकिङ्किणी झणझणायते
नृत्यति कपियुगलेऽप्यभिरामे॥

मञ्जरितं क्वचिद् रसालवनम्
गन्धयति निखिलवातावरणम्
कोकिलै रौति ऋतुराजोऽयम्
सुखमेति विहङ्गसमाजोऽयम्॥
उष्णतां किरति साम्प्रतं रविः
फाल्गुनिकं गायति लोककविः
कौतुकं सृजति ऋतुराजोऽयम्
सुखमेति विहङ्गसमाजोऽयम्॥

चातको रटति ननु पिहू-पिहू
पिकपुञ्जः क्रन्दति कुहू-कुहू
चेतनां हरति ऋतुराजोऽयम्
सुखमेति विहङ्गसमाजोऽयम्॥
रक्तं दृश्यते पलाशवनम्
सुखदं सायं प्रातस्सवनम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

नवदेहली